International Journal of Research in Social Science
Vol. 12 Issue 06, June 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राष्ट्रीय शिक्षा नीति व शारीरिक शिक्षा

सारांश

अलका पुरोहित
शोध छात्रा
लोक प्रशासन विभाग
डुँगर स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बीकानेर

शिक्षा के बिना मनुष्य का सर्वांगीण विकास असंभव है। शिक्षा के ज्ञान से ही व्यक्ति का भविष्य उज्जवल बन सकता है। शिक्षित नागरिकों से ही देश की उन्नति की जा सकती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा 24 जुलाई 1986 को भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित की गई जिसमें शिक्षा के अवसरों की समानता का प्रयास, विज्ञान, तकनीकी शिक्षा पर बल दिया गया तथा समयानुसार शिक्षा नीति में निरन्तर कुछ ना कुछ परिवर्तन किये गये वर्तमान में 29 जुलाई 2020 को नई शिक्षा नीति घोषित की गई इस शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा के अध्ययन पर विशेष जोर दिया गया सन् 1986 की शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह किया गया पहला परिवर्तन है। लेकिन क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा का महत्व व इसके प्रसार में बढ़ोतरी हो रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह शोध पत्र अवलोकनीय है।

मुख्य शब्द – राष्ट्रीय शिक्षा नीति, स्वास्थ्य शिक्षा, योजना, भारत सरकार, अध्ययन।

1. **प्रस्तावनाः**– मनुष्य के जीवन में उत्तम स्वास्थ्य एक आवश्यक कुंजी है। उत्तम स्वास्थ्य होने पर ही मनुष्य अपने कार्यो को सही ढंग से सम्पन्न कर सकता है। एक स्वस्थ मनुष्य ही एक सफल राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने आप को आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम होता है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में नागरिकों का स्वस्थ होना आवश्यक है। क्योंकि जब देश का नागरिक स्वस्थ होगा तब ही एक देश सम्पन्न हो सकता है। भारत सरकार ने कई नीतियों व कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया है। जिससे नागरिकों को अपने स्वास्थ्य से सम्बधित कार्यक्रमों व योजनाओं का सुचारू रूप से प्रबंधन करने का निरन्तर प्रयास किया गया है। सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया है। अब से समस्त विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों को शारीरिक शिक्षा से सम्बन्धित जानकारियों का अध्ययन करवाया जायेगा जिसमें खेलकूद, व्यायाम आदि को भी शामिल किया गया है ताकि बच्चो का शारीरिक व मानसिक विकास हो सके शारीरिक शिक्षा की भूमिका की विवेचना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

2. **अध्ययन की आवश्यकता व महत्वः**– शिक्षा को पूर्ण होने के लिए पाचं प्रधान क्रियाओं का होना आवश्यक है। शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, अतंरात्मिक व आध्यात्मिक आदि क्रियाए प्रमुख है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि जब तक हमारा शारीरिक स्वास्थ्य अध्ययन नहीं होगा तब तक हम वास्तव में अधिक मानसिक प्रगति नहीं कर सकेगे शारीरिक शिक्षा छात्रो को सामाजिक वातावरण में सहजता लेने तथा सकारात्मक शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक दायित्वों को निर्वहन करने के योग्य बनाती है। शारीरिक शिक्षा के अध्ययन से ही विद्यार्थियों को उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतू किन चीजो को अपनाना चाहिए तथा अच्छी स्वास्थ्य परक आदतों के प्रति रूझान को उत्साहित करती तथा मनुष्य के शरीर की शारीरिक गतिविधियों तथा कार्यो से अवगत करवाती है। प्रस्तुत शोध की सार्थकता इसकी आवश्यकता एवं इसका महत्व उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट है।

3. **अनुसंधान प्रविधिः**– प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की प्रकृति विवरणात्मक व विश्लेषणात्मक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा के महत्व को जानने के लिए शोध सरंचना के विवरणात्मक प्रकार को अपनाया गया है। तथा तथ्यात्मक व वास्तविकता को समझाने के लिए सहभागी शोध प्रविधि को आधार बनाया गया है।

4. **तथ्यों का संकलनः**– प्रस्तुत शोध अध्ययन को वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक बनाने के उद्देश्य से तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतो से सूचनाओं व तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

प्राथमिक स्त्रोतः–प्राथमिक स्त्रोत से सूचनाऐं प्राप्त करने के लिए प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया इन सूचनाओं को एकत्र करने के लिए शोधकर्ता द्वारा शारीरिक शिक्षकों व विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया गया।

द्वितीयक स्त्रोत :– शोध अध्ययनन के सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक पक्ष का विवेचन करने के लिए द्वितीयक स्त्रोतो से सूचनाएं एकत्रित की गई इसी क्रम में केन्द्र

International Journal of Research in Social Science
Vol. 12 Issue 06, June 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किये जाने वाले आदेश, समाचार पत्रो, विषय से सम्बन्धित पुस्तको में उपलब्ध अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

5. शारीरिक शिक्षा की भूमिका का प्रभावी ना होने के कारणः–

1. शारीरिक शिक्षा की भूमिका का प्रभावी ना होने के कारण शारीरिक शिक्षकों की भर्ती में देरी का होना रहा है।
2. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने से शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा मिला है। लेकिन अभी भी शारीरिक शिक्षा के प्रति रूझान को बढ़ावा देने में नीतियो व कार्यक्रमो में अभी भी कमियां है।
3. शारीरिक शिक्षा के अध्यापन हेतु योग्य शिक्षको का चयन भी एक जंग रही है। क्योंकि शिक्षको के चयन हेतु शारीरिक व मानसिक दोनो ही योग्यता का होना आवश्यक है।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शारीरिक शिक्षा की भूमिका का प्रभावी ना होने के कारण समय–समय पर विद्यालय स्तर पर खले कूद, योगासन, व्यायाम से सम्बन्धित प्रतियोगिता का आयोजन नही हो पा रहा है।
5. शारीरिक शिक्षा के अध्ययन हेतु विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को इस शिक्षा के अध्ययन को रूचिकर बनाने में कुछ कमियाँ पाई गई है। इस कारण शारीरिक शिक्षा का विस्तृत रूप से अध्ययन नहीं हो पा रहा है।

6. निष्कर्ष–

जब तक प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय स्तर पर समान रूप से शारीरिक शिक्षा का विस्तार नहीं किया जायेगा तब तक शारीरिक शिक्षा का विस्तार नहीं हो पायेगा जब तक योग्य शिक्षको का चयन, व विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिताओं का प्रबंधन सही ढंग से नहीं होगा तब तक विद्यालय स्तर पर शारीरिक शिक्षा का विस्तार रूप से अध्ययन कर पाना कठिन होगा।

7. सुझावः–

1. स्वास्थ्य ही जीवन है। अगर मनुष्य स्वस्थ होगा तो ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा इसलिए सरकार को शारीरिक शिक्षा को महत्व को उत्कर्ष रूप से उजागर करना चाहिए शारीरिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु उच्चतर शिक्षण संस्थाओं में भी शारीरिक शिक्षा के अध्ययन को अनिवार्य कर देने चाहिए।
2. शारीरिक शिक्षा का विद्यालय स्तर पर विस्तार करने हेतु शारीरिक गतिविधियों को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए।
3. शारीरिक शिक्षा के अध्ययन विस्तार हेतु प्रतिदिन विद्यालयो में योगासन व व्यायाम किया जाना चाहिए।
4. विद्यालय स्तर पर खेल कूद, योगासन आदि प्रतियोगिता का आयोजन कर शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।
5. शारीरिक शिक्षा के अध्ययन के विस्तार हेतु योग्य शारीरिक शिक्षको की भर्ती करनी चाहिए योग्य शारीरिक शिक्षको के द्वारा दी शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।
6. शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विद्यालय स्तर पर शारीरिक शिक्षा के अध्ययन के महत्व के बारे में जागरूक करने वाले होल्डर व स्टीकर लगाने चाहिए जिससे विद्याथियों में शारीरिक शिक्षा के अध्ययन हेतु रूचि जागरूक हो सके।

8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. डी. पाल, बाल स्वास्थ्य का विकास, प्रकाशन आशा राय, कश्मीरी घाट, नई दिल्ली वर्ष 1995
2. जॉन जे हनतान, प्रिंसिपल्स आफ पब्लिक हैल्थ एडमिनिस्ट्रेशन
3. योगेश कुमार सिंघल, भारत में विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम, 2020 धारणा, पृ. 23–33
4. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन 2005
5. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020
6. श्रीमती कस्तूरी सुन्दर राव, आरोग्य विज्ञान, एन. आर. पब्लिशिंग हाऊस, इन्दौर 1986